बात जब भी शिक्षा-व्यवस्था दुरुस्त करने की होती है, सरकार स्कूलों की नयी इमारतें खड़ी कर देती है. लेकिन, ये इमारतें न तो पढ़ती हैं, न ही पढ़ाती हैं. और जो पढ़, पढ़ा सकते हैं, उन पर ध्यान ही नहीं दिया जाता. सारंडा के बड़ी संख्या में प्राइमरी स्कूल पारा शिक्षकों के भरोसे हैं. मीडिल स्कूल व हाई स्कूल तो जैसे मजाक बन गये हैं. सारंडा की 36 हजार आबादी ने जब बच्चों की माध्यमिक और उच्च शिक्षा के लिए मीडिल व हाई स्कूलों की मांग की, तो सरकार ने प्राइमरी स्कूलों को ही अपग्रेड कर मीडिल और फिर उसी मीडिल को अपग्रेड कर हाई स्कूल का दरजा दे दिया. स्कूल तो साल दर साल अपग्रेड होते गये, लेकिन शिक्षकों की संख्या का अपग्रेडेशन नहीं हो पाया. यानी, जितने शिक्षक प्राइमरी स्कूल के लिए आवंटित थे, उन्हीं के भरोसे अपग्रेड स्कूलों को छोड़ दिया गया. समय के साथ पुराने शिक्षक रिटायर होते गये. उनकी जगह पर कहीं पारा शिक्षक रखे गये, तो कहीं नहीं रखे जा सके. आलम यह है कि कक्षा 01 से 10 तक के स्कूलों में दो और तीन शिक्षकों से काम चलाया जा रहा है.

सारंडा के स्कूल शिक्षक का टोटा

शिक्षण नहीं निगहबानी

सारंडा के उत्क्रमित उच्च विद्यालय, डोमलाई के पारा शिक्षक प्रदीप कुमार पुरती पर गत दिवस कक्षा 1-10 तक के बच्चों की जिम्मेवारी आ गयी. अकेले वे कितनी कक्षाओं और छात्रों को पढ़ाते, इसलिए पढ़ाने की बजाय उन्होंने बरामदे में खड़े होकर निगहबानी शुरू कर दी.

खुद पढ़िये और बनिये एकलव्य

36,000	700	820	1,800	07
सारंडा की आबादी	पहाड़ियों से घिरा है सारंडा	वर्ग किलोमीटर में फैलाव	फीट है समुद्र तल से ऊंचाई	हाई स्कूल हैं सारंडा में

उत्क्रमित उच्च विद्यालय, डोमलाई. दो फॉर्मल व एक पारा टीचर पर है कक्षा 1-10 तक के 325 बच्चों की पढ़ाई की जिम्मेदारी

यहां पढ़ाते नहीं उपदेश देते हैं शिक्षक, रिजल्ट 78 %

कुणाल देव ▸ जमशेदपुर

बिना शिक्षकों की पढ़ाई का फॉर्मूला पहले किताब को बोल-बोल कर पढ़ो | बातों को समझने की कोशिश करो | ग्रुप बनाओ और दोस्तों से पूछो | नहीं समझ आये तो दूसरे ग्रुप से पूछो | अंत में शिक्षक के पास पूछने पहुंचो

06 पंचायतें (मनोहरपुर सारंडा क्षेत्र)

45 प्राइमरी स्कूल

20 मीडिल स्कूल

129 कुल स्कूल (नोवामुंडी प्रखंड)

उत्क्रमित उच्च विद्यालय डोमलाई में बच्चों को पढ़ाते...नहीं-नहीं...उपदेश देते प्रभारी प्रधानाध्यापक शशि भूषण महतो तथा स्कूल का स्टाफ रूम जो कई काम में प्रयुक्त होता है. हाई स्कूल के छात्रों के लिए दिये गये प्रयोगशाला के उपकरण इसी कमरे में टंगे और रखे दिखेंगे तो स्पोर्ट्स किट भी यहीं रखा मिलेगा.

एशिया के विशालतम साल के जंगल सारंडा में विकास की रफ्तार काफी धीमी है. अकूत वन व खनिज संपदा को समेटे इस क्षेत्र के भोले-भाले ग्रामीणों को अब भी उनका वाजिब हक नहीं मिल पाया है. यहां अस्पताल हैं, तो डॉक्टर नहीं और स्कूल हैं, तो शिक्षक नहीं. देश का शायद यह एकलौता क्षेत्र हो, जहां पहली से दसवीं कक्षा की पढ़ाई के लिए सिर्फ दो-तीन शिक्षकों को पदस्थापित किया गया है.

सारंडा क्षेत्र में कुल सात हाई स्कूल हैं. इनमें से एक चिरिया हाई स्कूल पहले से अस्तित्व में है, जबकि छह को प्राइमरी से उत्क्रमित (अपग्रेड) करते हुए हाई स्कूल का दरजा दिया गया है. इनमें उत्क्रमित उच्च विद्यालय डोमलाई, उत्क्रमित उच्च विद्यालय रेड़ा, उत्क्रमित उच्च विद्यालय छोटानागरा, उत्क्रमित उच्च विद्यालय प्रोस्पेक्टिंग, उत्क्रमित उच्च विद्यालय गुवा व प्रोजेक्ट उत्क्रमित उच्च विद्यालय, किरीबुरू शामिल हैं. इन स्कूलों को न सिर्फ दरजा दिया गया, बल्कि भवन निर्माण के लिए फंड भी दे दिया गया. कई की इमारतें भी तैयार हैं. लेकिन, अबतक इन हाई स्कूलों के लिए शिक्षक पदस्थापित नहीं हो पाये.

ऐसे ही एक उत्क्रमित उच्च विद्यालय डोमलाई में हम गत दिनों पहुंचे. उस समय यहां प्रभारी प्रधानाध्यापक नहीं थे. वे स्कूल के काम से बैंक गये हुए थे. स्कूल में सिर्फ एक पारा शिक्षक प्रदीप कुमार पुरती बच्चों की निगहबानी कर रहे थे. उन्होंने बताया कि यहां कक्षा 1-10 तक की पढ़ाई होती है. कुल तीन शिक्षक पदस्थापित हैं. प्रभारी प्रधानाचार्य समेत दो फॉर्मल (स्थायी) हैं. दूसरे शिक्षक चाईबासा गये हुए हैं. चूंकि, वह एक साथ सभी कक्षाओं को नहीं पढ़ा सकते, इसलिए बच्चों को टास्क देकर उनकी निगहबानी कर रहे हैं. कक्षा नौ व दस के छात्रों को सेल्फ स्टडी के लिए कह दिया है.

इस बीच प्रभारी प्रधानाध्यापक शशि भूषण महतो भी बैंक का काम निपटा कर स्कूल आ पहुंचे. हमने उनसे पूछा- 325 बच्चों को सिर्फ तीन शिक्षक पढ़ाते कैसे हैं? उनका जवाब था-पढ़ाने की न तो स्थिति है, न ही हम पढ़ाने के लायक हैं. हमारी नियुक्ति तो प्राइमरी टीचर के रूप में हुई थी. लेकिन, सरकार ने हाई स्कूल की भी जिम्मेदारी दे दी. अब हम सीनियर क्लास के बच्चों को उपदेश देते हैं. सलाह देते हैं. उनसे कहते हैं, खुद पढ़ो. ग्रुप बनाकर पढ़ो. एक दूसरे ग्रुप से पूछो. जब कहीं चारा न दिखे, तभी शिक्षक के पास पहुंचे. इस प्रकार हम तीन शिक्षक पढ़ाई, बैंक और मिड डे मील का काम संभाल रहे हैं. पिछले साल दसवीं बोर्ड का रिजल्ट 78 प्रतिशत रहा था. यह छात्रों की मेहनत अथवा भगवान के आशीर्वाद का नतीजा था. उत्क्रमित उच्च विद्यालय रेड़ा का भी यही हाल है. यहां 450 बच्चों पर सिर्फ आठ शिक्षक हैं. उत्क्रमित उच्च विद्यालय गुवा और प्रोजेक्ट उत्क्रमित उच्च विद्यालय, किरीबुरू में तो सिर्फ तीन-तीन शिक्षक पदस्थापित हैं.

(इनक्लूसिव मीडिया-यूएनडीपी फेलोशिप 2015 के तहत प्रकाशित)

प्राइमरी स्कूल, रायबेड़ा

बस एक पारा शिक्षक के भरोसे चल रहा सबकुछ

पारा शिक्षक की गैरमौजूदगी में खुद ही पढ़ाई करते स्कूली छात्र.

प्रतिनिधि ▸ मनोहरपुर

सारंडा में शिक्षकों की कमी के कारण कई स्कूल तो महज पारा शिक्षकों के भरोसे चल रहे हैं. उन्हें पढ़ाने से लेकर मिडे डे मील व राशन उठाव तक का काम करना पड़ता है.

गत दिवस जब हम सारंडा के ग्राम रायबेड़ा स्थित प्राथमिक विद्यालय में पहुंचे तो वहां करीब डेढ़ दर्जन बच्चे खुद ही पढ़ते हुए मिले. बच्चों की तीन ताली सुनकर संयोजिका सह रसोइया नंदिया उरांव वहां पहुंचीं और उन्होंने हमें एक रजिस्टर दिखाया. इसमें स्कूल में पदस्थापित एकमात्र पारा शिक्षक ओलिबर बारला ने स्कूल से अनुपस्थित होने का कारण दर्ज किया था. श्री बारला ने लिखा था कि वे मिड डे मील के लिए चावल उठाने बीआरसी गये हैं. हालांकि, बच्चे शिक्षकों की अनुपस्थिति का सही-सही जवाब नहीं दे पाये थे.

पारा शिक्षक की अनुपस्थिति नोट को दिखाती संयोजिका.

स्कूलों में डेपुटेशन पर शिक्षकों को भेजा गया है. साथ ही सभी बीइइओ को निर्देश दिया गया है कि जिन स्कूलों में ज्यादा शिक्षक हैं, उनमें से जरूरत मंद स्कूलों को ट्रांसफर किया जाये. जिले को कुल 46 शिक्षक मिले हैं. और शिक्षकों की जरूरत है. मिलने पर आवश्यकता वाले स्कूलों में पोस्टिंग दी जायेगी.

नीलम आइलिन टोप्पनो, डीएसइ (पश्चिमी सिंहभूम)

सगरी नगरिया शोर आपन हियां ना भोर...

इस्को मध्य विद्यालय चिरिया: महारत्न कंपनी सेल द्वारा संचालित स्कूल की छत तक उड़ चुकी है, शौचालय में गंध

राधेश सिंह राज ▸ मनोहरपुर

महारत्न कंपनी सेल जिस चिरिया लौह अयस्क खदान के बूते पूरे वश्वि में मशहूर और संपन्न है, उसी चिरिया में संचालित दो स्कूल, दो अलग-अलग वजहों से जाने जाते हैं. डीएवी स्कूल चिरिया जहां उत्तम शिक्षा व व्यवस्था के लिए जाना जाता है, वहीं इस्को मवि चिरिया अपनी बदहाली के लिए मशहूर है.

चिरिया समेत सारंडा के अधितर मजदूर वर्ग व वनग्रामों के बच्चे इस्को मीडिल स्कूल में पढ़ते हैं. यहां पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या करीब 382 हैं, जिनके लिए प्राचार्य समेत 12 शिक्षक रखे गये हैं. छात्राएं बीना हेम्ब्रम व सुमन सुरीन बहुत संकोच के साथ बताती हैं कि लड़कियों को बाथरूम करने के लिय स्कूल भवन के पीछे जाना पड़ता है. यह काफी शर्मनाक है और असुरक्षित भी. बारिश में क्लास की छत से पानी टपकता है. प्राचार्य बताते हैं कि वे कई बार प्रयास करत चुके हैं, लेकिन सेल के अधिकारी ध्यान ही नहीं देते. उधर, सेल के कार्मिक विभाग के पदाधिकारी जीआर मोहंती का कहना है कि सफाई कर्मी की कमी की वजह से मीडिल स्कूल में साफ-सफाई नहीं हो पा रही है. शिक्षकों की कमी की बात सही नहीं है. प्राचार्य रोहित पान कोई भी क्लास अटेंड नहीं करते. शिक्षकों के प्रति उनका रवैया भी सही नहीं है.

जर्जर छत

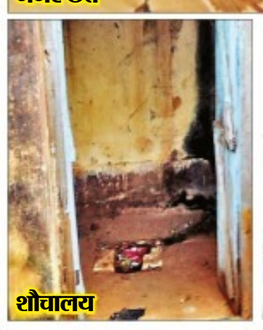

शौचालय

सुमन

बीना

प्राचार्य रोहित पान 31 जनवरी 2017 को रिटायर हो जायेंगे. उनका सपना है कि स्कूल में पढ़ाई से लेकर भवन तक उनके ही कार्यकाल में दुरुस्त हो जाये. स्कूल में छात्र अनुपात में शिक्षक नहीं है. भवन जर्जर हो चुका है. शौचालय ऐसे हैं कि वे रोगों को आमंत्रण देते हैं. इसलिए, लड़कों के साथ-साथ लड़कियों को भी खुले में शौच जाना पड़ता है.

प्रावि छोटाजामकुंडिया: अधबने स्कूल भवन में पढ़ते हैं बच्चे

चिरिया. मनोहरपुर प्रखंड के छोटानागरा पंचायत अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय, छोटा जामकुंडिया के 92 छात्र-छात्राओं को विद्यालय के अर्धनिर्मित भवन में ही पढ़ाया जा रहा है. इसका कारण है पुराने स्कूल भवन की जर्जर स्थिति में होना है. इसकी छत से प्लास्टर, पानी और कंक्रीट गिरता रहता है. स्कूल में प्रधानाध्यापक को मिला कर कुल तीन शिक्षक हैं. विद्यालय के प्रधानाध्यापक हेमंत कुमार चेरोवा ने बताया कि स्कूल भवन के साथ-साथ यहां पाकशाला व शौचालय की भी स्थिति अत्यंत दयनीय है. स्कूल के पुराने भवन की छत से पानी के साथ-साथ प्लास्टर भी गिरता रहता है, जिससे बच्चों पर खतरा मंडराता रहता है.

- पुराने भवन की छत से गिरता है प्लास्टर, चूता है पानी

उत्क्रमित हुआ, पर व्यवस्था नहीं बदली

उच्च विद्यालय प्रोस्पेक्टिंग: कक्षा 1-10, छात्र 550, शिक्षक 08, जरूरत 10 (मीडिल स्कूल) व 11-16 (हाई स्कूल)

शैलेश सिंह ▸ किरीबुरु

उत्क्रमित उच्च विद्यालय, प्रोस्पेक्टिंग (किरीबुरु) का न तो कोई इन्फ्रास्ट्रक्चर बना है, न ही शिक्षकों की तैनाती हुई है. चूंकि, राजकीय मध्य विद्यालय को अपग्रेड कर इसे उत्क्रमित उच्च विद्यालय का दर्जा दिया गया है, इसलिए अब इसके संचालन की जिम्मेदारी भी उन्हीं शिक्षकों को सौंप दी गयी है, जो मध्य विद्यालय में पढ़ाते रहे हैं. नतीजतन, प्राइमरी व मीडिल स्कूल भवन में ही हाई स्कूल का संचालन हो रहा है. जबकि, उच्च विद्यालय के संचालन के लिए कम से कम 11-16 शिक्षकों की जरूरत होती है.

स्कूल में वर्ग 1-8 तक के छात्रों की संख्या 433 एवं वर्ग 9-10 के छात्रों की संख्या 117 है. इन तमाम छात्रों को पढ़ाने के लिये विद्यालय में प्रभारी प्रचार्य समेत कुल आठ शिक्षक-शिक्षिकाएं हैं. वर्ग 6-8 के छात्रों को पढ़ाने के लिए विज्ञान, कला एवं भाषा में से सिर्फ भाषा के शिक्षक की पद्स्थापना की गयी. जबकि, विज्ञान व कला के शिक्षक नहीं हैं. विद्यालय में कुल 14 कमरे हैं, जिसमें दस कमरे शैक्षणिक कार्य अर्थात क्लास रूम के रूप में, एक कमरा पुस्तकालय, एक कमरा प्रयोगशाला तथा दो कमरा आफिस व शिक्षकों के प्रयोग में हैं. इस विद्यालय में छात्राओं के लिये दो शौचालय हैं, जबकि छात्रों के लिये एक भी शौचालय नहीं है. छात्र स्कूल के बाहर खुले में शौचालय हेतु जाते हैं. स्कूल की चहारदीवारी टूटी है.

स्कूल भवन

दो क्लासों को मिलाकर पढ़ाते हैं शिक्षक

शिक्षकों की कमी की वजह से प्राय: दो क्लास को संयुक्त रूप से मिलाकर छात्रों को पढ़ाया जाता है. विद्यालय के क्लर्क मिथुन कच्छप भी अपना कार्य छोड़कर प्राइमरी के बच्चों को पढ़ाते हैं. प्रभारी प्रचार्य मो आलम स्कूल की कार्य की वजह से नोवामुण्डी गये थे. उनकी अनुपस्थिति में विद्यालय के भाषा के शिक्षक सोमनाथ पति ने प्रभात खबर को बताया कि हमारे विद्यालय में उच्च विद्यालय का कोई भी इन्फ्रास्ट्रक्चर व शिक्षक नहीं है. जो शिक्षक हैं, वही कक्षा 1-10 तक के छात्रों को पढ़ाते हैं.